देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय को प्रतिनिधि चाहिए
पत्रकारिता के साथ सामाजिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक-अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें- 91 8839797448/942443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ ११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निर्दलीय

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.com पर उपलब्ध
विधिः पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

जो हारे नहीं हैं, जिंदगी से वे शांत हैं। जो झंझावातों से डर गए वे क्लांत हैं।।

त्वरित विचार
अग्र लेख-१११

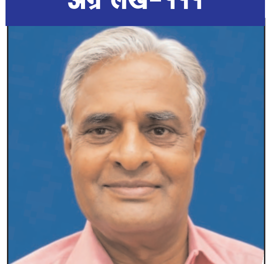

कैलाश आदमी

कहा गया है कि समय सबसे सामर्थ्यवान है। वह समय ही है जो प्रकृति के सान्निध्य में जन्म लिया और शाश्वत रूप ग्रहण किया। समय ही समस्त प्राणियों का गुरु है जो हमें निरंतर चलते रहने का संकेत और संदेश देता है।

चरैवेति-चरैवेति अर्थात चलते रहो और जीवन में प्रगति करना है तो आगे बढ़ो और प्रतिस्पर्धा कहती है कि मेरे पीछे रहो।

जीवन अपने आप में एक स्पर्धा है। इस परीक्षा में जो व्यक्ति अपनी हीनताबोध से ग्रस्त रहता है वह आगे नहीं बढ़ पाता। प्रतिस्पर्धा में यदि व्यक्ति हीनता बोध का शिकार है तो वह सफल नहीं हो सकता। प्रतिस्पर्धा में रत व्यक्ति को कभी भी अन्य प्रतिस्पर्धाधारियों से ईर्ष्या नहीं रखना चाहिए। ईर्ष्या व्यक्ति की हीनता को दूर नहीं करती सिर्फ प्रतिरोध को जन्म देती है। ईर्ष्या रखने वाले मनुष्य को इतना दुःख अपनी असफलता पर नहीं होता जितना दुःख दूसरे की सफलता देखकर होता है। अतएव मनुष्य को दूसरे की सफलता पर दुखी होने की बजाए आगे मेहनत करने रहना चाहिए ताकि अगली स्पर्धा में सफल हो सके। ईर्ष्या अन्य लोगों के प्रति घृणा को जन्म देती है। किसी आदमी के भीतर घृणा है, उसके लिए सारा जगत शत्रु हो जाता है, और जिस आदमी के भीतर प्रेम होता है, उसके लिए सारा जगत मित्र हो जाता है।

यदि जीवन में सफल होना है तो स्पर्धा आड़े नहीं आती। अतएव स्पर्धा का सामना टकराव या आलोचना से करने की बजाए टकराव और ईर्ष्या को टालना चाहिए। घृणा और ईर्ष्या व टकराव को हमेशा टालना चाहिए अन्यथा ये तत्व बिखराव के कारण बन जाते हैं और बिखराव ही दुख का कारण बनता है। अतएव घृणा और ईर्ष्या व टकराव ग्रंथां की आग को बुझा दीजिए नहीं तो यह आपको जलाकर राख कर देगी।

एक आख्यान के अनुसार जीवन तीर्थयात्रा के समान है। जिस तरह तीर्थ यात्री अपनी यात्रा पर धर्म का भाव मन में लेकर निकलता है उसी तरह जो व्यक्ति नास्ता लिये बिना लम्बे मार्ग पर चल देता है वह चलता हुआ भूख-प्यास से पीड़ित होकर दुःखी होता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति धर्म की भावना मन में अंतर्निहित किये बिना यात्रा पर चल देता है वह व्याधि रोग से पीड़ित एवं दुःखी होता है।

एक अन्य आख्यान है- साहस, कायरता और हँसी छूत की बीमारी के समान हैं। बुद्धिमान वह है जो अपने कानों की अपेक्षा अपनी आँखों पर भरोसा करे । इसी तरह एक अन्य आख्यान ध्यान में रखना चाहिए- निरर्थक कलह करना मूर्खों का काम है, बुद्धिमानों को इसका त्याग करना चाहिए। ऐसा करने से लोक में यश मिलता है और अनर्थ का सामना नहीं करना पड़ता। इस अभिप्राय को समझने वाला व्यक्ति ही बुद्धिमान होता है। बुद्धिमान मनुष्य अपने अनुभवों से सीखता है, किन्तु और अधिक बुद्धिमान दूसरों के अनुभवों से सीखता है।

पृथ्वी पर अत्यन्त बुद्धिमान मनुष्य वही है जो अपनी आरंभिक अवस्था से ही एक अच्छा मनुष्य बनने का संकल्प लेकर आगे बढ़ता रहता है। यदि आप अच्छा बनना चाहते हो तो अपने आपको सबसे बुरा समझो। जब आप स्वयं को सबसे अच्छा ना समझकर सबसे बुरा समझेंगे तभी आप सबसे अच्छा मनुष्य बनने जैसे संकल्प को पा सकेंगे। इस संकल्प को पाने के लिए यह भी आवश्यक है कि अब सत्यनिष्ठ हों, अहिंसक हों और निर्भय हों।

निर्भयता को अपनाने वाला व्यक्ति कभी भी दूसरे व्यक्ति को डराने या भयभीत करने का काम नहीं करता। वह जानता है कि जो दूसरों में डर का संचार करता है, वह स्वयं सदैव डर से आतंकित रहता है।

एक अन्य प्रसिद्ध आख्यान है- बीती बातों को भुला देने में ही आपकी भलाई है। कहा गया है- जो बीत गया वो बीत गया अर्थात जो समय चला गया वह लौटकर आने वाला नहीं है। व्यक्ति को जो जीवन मिला है वह उसकी क्रीड़ा स्थली है। अतीत के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य को वर्तमान पथ का चयन कर भावी योजना का निर्धारण करना चाहिए। जब व्यक्ति अतीत के साथ अपने अनुभवों से सबक लेकर आगे बढ़ता है तो उसका ना केवल वर्तमान सुधरता जाता है बल्कि भावी योजना के निर्धारण में भी सफल होता है। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि अतीत में यदि कोई चूक या भूल हुई है तो उसे दोहराना नहीं है बल्कि उससे सबक लेकर आगे बढ़ते जाना है।

हर व्यक्ति यह इच्छा रखता है कि वह अतीत की तुलना में वर्तमान को बेहतर सिद्ध करें। इस दृष्टि से वह अपने जीवन में कोई गलत कदम नहीं उठाता। वह प्रत्येक कदम अपने घर-परिवार और समाज की स्थिति देखकर उठाता है। ऐसा करने पर उसे आंतरिक व मानसिक शांति मिलती है। वह अपनी आय और घर-परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति देखकर ही आगे कदम बढ़ाता है। साधारणतया यह देखा गया है कि यदि घर-परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी है तो आमतौर पर यह स्थिति व्यक्ति को आराम तलब बना देती है। अतएव, अच्छा व्यक्ति वही है जो आरामतलबी की बजाए सदैव कर्तव्यनिष्ठ रहे।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

जो हारे नहीं हैं, जिंदगी से वे शांत हैं।
जो झंझावातों से डर गए वे क्लांत हैं।।

राजा ही काल का कारण है

अशोक झा

राजा कालस्य कारणम् अर्थात राजा ही काल का कारण है। आजकल जब भी आप टीवी खोलेंगे या अखबार उठाएंगे, सत्ता में बैठे नेताओं, उनके प्रवक्ताओं, समर्थकों और सुबह-शाम चिल्लाने वाली उन झालमुड़ी वाली एंकरों के मुंह से आपको एक बड़ा ही बंधा-बंधाया राग सुनने को मिल जाएगा। जब भी जनता महंगाई, बेरोजगारी या डूबती हुई अर्थव्यवस्था पर सवाल पूछेगी, तो ये लोग तुरंत ज्ञान बांटने आ जाएंगे कि साहब, महंगाई तो इसलिए बढ़ गई है क्योंकि दुनिया के किसी कोने में लड़ाई चल रही है, पेट्रोल-डीजल इसलिए महंगा है क्योंकि अंतरराष्टीय बाजार में कच्चे तेल का खेल उलझा हुआ है, अब हम क्या करें, वक्त ही खराब है! सीधे शब्दों में कहें भाईसाहब, तो आज की राजनीति का एक बड़ा ही चालू सा फॉर्मूला बन चुका है—जब भी कोई काम अच्छा हो, तो क्रेडिट लेने के लिए अपनी पीठ खुद थपथपा लो, और जब काम बिगड़ने लगे या जनता महंगाई से त्रस्त होकर रोने लगे, तो सारा दोष समय और खराब परिस्थितियों के सिर मढ़कर पतली गली से निकल लो।

लेकिन यहाँ एक बड़ा सवाल यह खड़ा होता है कि क्या वाकई किसी देश का हाल समय और परिस्थितियां तय करती हैं, या फिर सत्ता की मखमली कुर्सी पर बैठा हुआ राजा? अगर आज के इन बहानेबाज़ नेताओं और उनके अंधसमर्थकों के तर्कों की हवा निकालनी है ना, तो हमें हज़ारों साल पीछे महाभारत के उस पन्ने को पलटना होगा, जहाँ राजनीति और राजधर्म का सबसे बड़ा पाठ पढ़ाया गया है। महाभारत के शांति पर्व में युधिष्ठिर और भीष्म पितामह के बीच का एक ऐसा संवाद आता है, जो राजनीति, राजधर्म और समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से बेहद अद्भुत और गहरा है। कुरुक्षेत्र के महाविनाशकारी युद्ध की समाप्ति के बाद, जब युधिष्ठिर हस्तिनापुर का राजपाठ संभालने जा रहे थे, तब उनके मन में नेतृत्व, शासन और व्यवस्था को लेकर कई तरह की उलझनें और दुविधाएँ चल रही थीं। अपनी इन्हीं शंकाओं को दूर करने के लिए वे तीरों की शय्या पर लेटे पितामह भीष्म के पास पहुँचे और उनसे राजनीति का एक ऐसा बुनियादी सवाल पूछा, जो आज भारत का हर आम नागरिक अपने टैक्स के पैसों से चलने वाली सरकारों से पूछना चाहता है।

युधिष्ठिर ने सीधे पूछा- राजा कालस्य कारणम्, उतो कालो महीपतेः? यानी हे राजाओं में श्रेष्ठ, हे पितामह! आप मुझे यह बताइए कि देश में जो भी अच्छा या बुरा दौर आता है, उसके लिए समय ज़िम्मेदार होता है या वहाँ का राजा? क्या राजा परिस्थितियों के आगे मजबूर होता है, या परिस्थितियाँ राजा के फैसलों से बदलती हैं? यहाँ काल का मतलब केवल घड़ी का समय नहीं है, बल्कि युग की परिस्थितियाँ, समाज की दशा, जनता के सुख-दुख और पूरे देश का माहौल है। आज की सीधी-सरल भाषा में कहें तो युधिष्ठिर असल में यह जानना चाहते थे कि अगर देश की जनता परेशान है, रो रही है, तो क्या देश का राजा यह कहकर विक्टिम कार्ड खेल सकता है कि दौर ही खराब चल रहा है, अंतरराष्ट्रीय मंदी है, मैं भला इसमें क्या करूं? इस पर भीष्म पितामह ने बिना किसी लाग-लपेट के, बिना किसी संशय के जो दो टूक जवाब दिया, वह आज के समय में भी हमारे लोकतंत्र और नेतृत्व पर पूरी तरह सटीक बैठता है और आज के हर हुक्मरान की आंखें खोलने के लिए काफी है। पितामह भीष्म ने साफ शब्दों में स्पष्ट किया कि राजा कालस्य कारणम् यानी राजा ही काल का कारण है। उन्होंने साफ कर दिया कि काल कभी राजा का कारण नहीं होता, बल्कि राजा ही अपने युग और अपने समय का असली निर्माता होता है। एक शासक अपनी नीतियों, अपने चरित्र और अपने फैसलों से तय करता है कि उसका देश और उसकी जनता किस दौर से गुज़रेगी। देश का अच्छा या बुरा वक्त किसी समय चक्र या आसमान के ग्रहों की चाल से नहीं, बल्कि सत्ता की नीयत और उसके कर्मों से तय होता है। इस गहरे राजनीतिक सिद्धांत को आम जनता को समझाने के लिए भीष्म जी ने चार युगों का बड़ा ही सरल उदाहरण दिया।

उन्होंने समझाया कि जब राजा पूरी तरह राजधर्म का पालन करता है, कानून यानी दंड नीति का सही और निष्पक्ष उपयोग करता है, प्रजा की रक्षा करता है और खुद सदाचारी होता है, तब समाज में चारों तरफ सुख, शांति और समृद्धि फैलती है और ऐसा माहौल क्योंकि सिर्फ राजा की वजह से बनता है, इसलिए राजा ही देश में कृतयुग यानी सत्ययुग को लेकर आता है। इसके बाद, जब राजा राजधर्म में थोड़ी ढील देने लगता है, कानून का पालन शत-प्रतिशत नहीं करता, तब समाज में आंशिक रूप से बुराइयाँ और भ्रष्टाचार सिर उठाने लगते हैं, और तब वह त्रेता या द्वापर युग जैसी परिस्थितियाँ खुद अपने हाथों से पैदा करता है। और भाईसाहब, सबसे जरूरी बात जो पितामह ने कही वो यह कि जब राजा पूरी तरह भ्रष्ट हो जाता है, प्रजा का शोषण करने लगता है, कानून व्यवस्था को अपनी जागीर और खिलौना बना देता है और अधर्म करने वालों का साथ देने लगता है, तो चारों तरफ हाहाकार, अपराध, भुखमरी और गरीबी फैल जाती है। भीष्म पितामह डंके की चोट पर कहते हैं कि यह कलियुग किसी समय चक्र या भगवान की मर्जी की वजह से नहीं आता, बल्कि राजा के पापकर्म, उसकी गलत नीतियों और उसकी नालायकी की वजह से पैदा होता है। इस पूरे संवाद का सीधा और शाश्वत संदेश यही था भाईसाहब, कि भीष्म पितामह युधिष्ठिर के माध्यम से दुनिया के हर शासक को यह समझा रहे थे कि एक लीडर कभी भी अपनी विफलताओं और नाकामियों का ठीकरा समय या वैश्विक परिस्थितियों पर नहीं फोड़ सकता। अगर देश में गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी या अपराध बढ़ रहे हैं, तो राजा यह घटिया बहाना बिल्कुल नहीं बना सकता कि हम क्या करें भाईसाहब, दौर ही खराब चल रहा है, पूरी दुनिया परेशान है। परिस्थितियाँ कैसी भी हों—चाहे वह वैश्विक मंदी हो, पड़ोसी देश में चल रहा कोई युद्ध हो, या भयंकर अकाल पड़ा हो—एक सच्चा, कुशल और मजबूत राजा वही है जो विपरीत हालातों में भी अपनी नीतियों और सूझबूझ से अपनी प्रजा को संकट के दलदल से सुरक्षित बाहर निकाल ले जाए। जनता ने राजा को टैक्स और सत्ता की चाबी इसलिए नहीं सौंपी है कि वो संकट आते ही हाथ खड़े कर दे, बल्कि इसलिए सौंपी है ताकि वह इन तूफानों से देश की कश्ती को पार लगाए। शासक का दायित्व ही यही है कि वह विपरीत समय की धाराओं को मोड़कर अपनी जनता को सुरक्षा और समृद्धि प्रदान करे। जो नेता संकट के समय दुनिया में उथल-पुथल मची है का रोना रोने लगे, भीष्म पितामह की नजर में वो राज गद्दी पर बैठने के लायक ही नहीं है और राजधर्म की कसौटी पर कभी खरा नहीं उतर सकता।

महाभारत का यह प्रसंग हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम कब तक नेताओं के इन झूठे बहानों को सच मानकर अपना शोषण करवाते रहेंगे? **(अररिया, बिहार)**

कॉकरोच के विरुद्ध युद्ध में विज्ञान की पराजय

हमारे देश में इन दिनों एक साथ बहुत सारे नए कॉकरोच (झींगुर) पैदा हो गए हैं। एक मामले की सुनवाई के दौरान भारत के मुख्य न्यायाधीश ने टिप्पणी की थी कि बेरोजगार युवा कॉकरोच जैसे होते हैं, जो बिना किसी उद्देश्य के इधर-उधर भटकते रहते हैं। इस टिप्पणी के बाद कुछ युवाओं में नाराजगी फैल गई और उन्होंने मजाकिया अंदाज में कॉकरोच पार्टी बना ली। सोशल मीडिया पर उसके रिकार्ड तोड़ अनुयाई भी बन गए।

वीरेंद्र बहादुर सिंह

लेकिन जिस जीव को हम तिलचट्टा या झींगुर (कॉकरोच) कहते हैं, उसका इस आंदोलन से कोई संबंध नहीं है। प्रकृति की यह अनोखी रचना वास्तव में सदाबहार जीव है। अँग्रेज़ी में इसे कॉकरोच कहा जाता है और अमेरिका में लोग इसे संक्षेप में रोच कहते हैं।

आज अधिकांश अमेरिकी घरों में कॉकरोचों ने डेरा जमा लिया है। करोड़ों डालर का नुकसान पहुंचाने वाले चूहों से वर्षों तक लड़ने के बाद अमेरिका को अब कॉकरोचों के खिलाफ भी युद्ध छेड़ना पड़ा है। बाथरूम, रसोई, अलमारी, किताबों की रैक, फर्नीचर और बिस्तरों तक, हर जगह ये अपनी लंबी मूंछनुमा एंटीना हिलाते हुए दिखाई देते हैं।

कॉकरोच इतने चतुर होते हैं कि किसी नए मकान में इंसानों के बसने से पहले ही पहुंच जाते हैं। दीवारों की दरारों में अपना घर बना लेते हैं और जब तक भोजन उपलब्ध नहीं होता, तब तक ताजे रंगों में मिले जैविक पदार्थों से भी पोषण प्राप्त कर लेते हैं। न्यूयार्क के कीट वैज्ञानिक आइजनर के अनुसार एक कॉकरोच डाक टिकट के पीछे लगे गोंद पर महीनों तक जीवित रह सकता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार कॉकरोच लगभग 34 करोड़ वर्षों से पृथ्वी पर मौजूद हैं। उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक उनका अस्तित्व पाया जाता है। जर्मनी में उन्हें स्कार्लन, फ्रांस में ब्लाटीस, स्पेन में कुकराचास और अमेरिका-ब्रिटेन में कॉकरोच कहा जाता है। बाल्टिक सागर के किनारे मिले लगभग तीन करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्मों के अध्ययन से पता चला कि आज के कॉकरोच और प्राचीन कॉकरोचों में लगभग कोई अंतर नहीं है। यह शायद पृथ्वी का एकमात्र ऐसा जीव है, जिसमें करोड़ों वर्षों के दौरान बहुत कम परिवर्तन हुआ है।

अमेरिका की सीनेट, जहां परमाणु हथियारों और अंतरराष्ट्रीय राजनीति जैसे विषयों पर चर्चा होती है, वहां भी कॉकरोचों का आतंक देखा गया। सीनेटरों की मेजों पर दौड़ते कॉकरोच देखकर कई सदस्यों को घृणा हुई और उन्होंने कृषि मंत्रालय से विशेष कार्रवाई की मांग की।

वैज्ञानिक मानते हैं कि आज पृथ्वी पर कॉकरोचों की लगभग 2,000 प्रजातियां हैं। अफ्रीका में हरे, पीले, लाल और नारंगी रंग के कॉकरोच भी पाए जाते हैं। इनकी लंबाई आधे इंच से लेकर तीन इंच तक हो सकती है।अधिकांश प्रजातियां जंगलों में सड़ी हुई वनस्पति और लकड़ी पर निर्भर रहती हैं। माना जाता है कि मनुष्यों की बस्तियों में उनका प्रवेश केवल लगभग 400 वर्ष पहले हुआ, जब समुद्री व्यापार का विस्तार हुआ। जहाजों और माल के बक्सों के साथ वे एक देश से दूसरे देश पहुंच गए। जब अपोलो अभियान चंद्रमा की ओर जाने वाला था, तब अंतरिक्ष यान में भी एक कॉकरोच दिखाई दिया था। रूसी वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण (माइक्रोग्रैविटी) की स्थिति में कॉकरोचों पर प्रयोग किए।

नादेदा नामक एक मादा कॉकरोच ने अंतरिक्ष में गर्भधारण करके जीवित बचों को जन्म दिया। इस प्रकार अंतरिक्ष में पैदा हुए 33 कॉकरोचों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की गई। समुद्र विज्ञानियों ने बाथिनोमस नामक विशाल समुद्री कॉकरोचों की भी खोज की है। ये समुद्र की गहराइयों में रहते हैं। कुछ नमूने 35 सेंटीमीटर (14 इंच) तक लंबे पाए गए हैं। इनके सात जोड़ी पैर होते हैं और इनके जबड़े इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे छोटी मछलियों का रक्त चूस सकते हैं तथा बड़े समुद्री जीवों के शवों को भी खा जाते हैं। जहां भारत में भोजन में कॉकरोच दिख जाए तो लोग खाना छोड़ देते हैं, वहीं चीन में कुछ क्षेत्रों में कॉकरोचों का सूप बनाया जाता है। शंघाई में कई लोग भोजन से पहले चुचाई नामक कॉकरोच सूप पीते हैं। चीन में कॉकरोचों का उपयोग औषधियां बनाने में भी किया जाता है।

कॉकरोच का शरीर चपटा और चिकना होता है। उसके शरीर पर तेल और मोम जैसी परत होती है, जिससे वह लंबे समय तक पानी के बिना जीवित रह सकता है। उसके छह पैर होते हैं और वे अत्यंत तेज गति से दौड़ सकते हैं।

यदि भोजन न मिले तो वह गोंद, कागज, साबुन और अनेक अन्य पदार्थों पर भी जीवित रह सकता है। उसका बाहरी आवरण इतना मजबूत होता है कि वह मनुष्य की तुलना में कहीं अधिक विकिरण (रेडिएशन) सहन कर सकता है। कुछ प्रजातियां 48 घंटे तक पूरी तरह जमी रहने के बाद भी जीवित रहती हैं। कॉकरोच के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग उसकी लंबी मूंछें (एंटीना) हैं। इन्हीं की सहायता से वह स्वाद, गंध और स्पर्श का अनुभव करता है। यदि उसकी आंखें न भी हों, तो वह केवल एंटीना के सहारे अपना जीवन चला सकता है। उसके पैरों में कंपन-संवेदक (वाइब्रेशन सेंसर) होते हैं, जिससे वह दूर से आती हल्की-सी आहट भी महसूस कर लेता है। कॉकरोच गंदगी में रहने के कारण अपने शरीर और पैरों पर अनेक रोगजनक जीवाणु ढोते हैं, जैसे अमीबा, ई-कोलाई और साल्मोनेला। ये टाइफाइड, पेचिश, हैजा और अन्य बीमारियाँ फैलाने में भूमिका निभा सकते हैं।

एक मादा कॉकरोच सिद्धांततः वर्ष भर में एक लाख तक संतान पैदा कर सकती है। सामान्यतः वह एक बार में 30-32 अंडे देती है। 15 से 72 दिनों के भीतर अंडों से बचे निकल आते हैं। मादा कॉकरोच नर को आकर्षित करने के लिए फेरोमोन नामक रसायन छोड़ती है। नर कॉकरोच 40 फुट दूर से भी इसकी गंध पहचान सकता है।

कॉकरोचों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्रतिरोधक क्षमता है। हर नई पीढ़ी कई बार पुराने कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधी बनकर पैदा होती है। एक समय था जब डीडीटी से कॉकरोच मर जाते थे, लेकिन बाद में उनकी नई पीढ़ियों में ऐसे एंजाइम विकसित हो गए जो डीडीटी के विषैले प्रभाव को निष्क्रिय कर देते थे। वैज्ञानिक कॉकरोचों की आबादी नियंत्रित करने के लिए कई नई तकनीकों पर काम कर रहे हैं,

एक्स-रे द्वारा नर कॉकरोचों का बंध्याकरण, परजीवी कीटों का उपयोग, जो कॉकरोचों के अंडे खा जाते हैं, ऐसे रसायनों का विकास जो उनके प्रजनन व्यवहार को प्रभावित कर सकें। भारत में भी वैज्ञानिकों ने ऐसे परजीवी जीवों की खोज की है,जो कॉकरोचों के अंडों को नष्ट कर देते हैं और उनकी संख्या घटाने में सहायक हो सकते हैं। कॉकरोचों को नष्ट करने के लिए दुनिया भर में अरबों डालर खर्च किए जा चुके हैं, फिर भी उनकी पूरी तरह समाप्ति संभव नहीं हो सकी है। उनकी अद्भुत अनुकूलन क्षमता, तेज प्रजनन और कीटनाशकों के प्रति बढ़ती प्रतिरोधक शक्ति ने विज्ञान को लगातार चुनौती दी है।

इसलिए विशेषज्ञों का मानना है कि कॉकरोचों के खिलाफ युद्ध में मनुष्य की जीत निश्चित नहीं है। फिलहाल सबसे प्रभावी उपाय यही है कि घरों को स्वच्छ रखा जाए, खाद्य पदार्थों को ढककर रखा जाए और गंदगी तथा नमी को कम किया जाए। क्योंकि केवल दवाओं के भरोसे कॉकरोचों से हमेशा के लिए छुटकारा पाना संभव नहीं लगता। -नोएडा

द्वापरयुग का विवेचन

प्रेमलता भार्गव

हमारे हिन्दू धर्म शास्त्रों में चार युगों को मान्यता प्रदान की गई है। इनके नाम हैं -सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग। इनमें द्वापरयुग त्रेता युग के पश्चात तथा कलियुग के पूर्व आता है।इस प्रकार यह चारों युगों में तीसरा युग है। इस युग की समयावधि धर्म शास्त्रों के अनुसार आठ लाख चोंसठ हजार वर्ष है। इस युग में धर्म के चार चरणों में से केवल दो चरण शेष रह गये थे। इस प्रकार इस युग में धर्म तथा अधर्म का अनुपात समान मात्रा में था अर्थात् इस युग में दो चरण धर्म के थे तो दो चरण अधर्म के भी थे। इस युग में यज्ञ हवनादि जैसे धार्मिक कृत्य भी होते थे तथा निजी स्वार्थ के लिए अनेकों षड्यंत्र भी रचे जाते थे। इस प्रकार यह युग अच्छी बुरी ?दोनों प्रकार की भावनाओं का युग था।

इस युग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी श्री विष्णु भगवान का अपनी सोलह कलाओं के साथ इस धरा धाम पर अवतरित होना तथा दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी कुरुक्षेत्र में महाभारत नाम का महाविनाशकारी युद्ध। यह युद्ध वैसे तो चचेरे भाइयों कोरवों तथा पांडवों के बीच लड़ा गया था लेकिन इस युद्ध में समस्त भारत के शासकों ने अपने सैन्य बल सहित भाग लिया था। इस युग के महानायक थे श्रीकृष्ण, जिन्होंने द्वापरयुग के उत्तरार्ध में मथुरा में माता देवकी तथा पिता वसुदेव के घर में पुत्र के रूप में जन्म लिया था लेकिन इनका बाल्यकाल माता यशोदा तथा पिता नन्द बाबा के घर में नन्दगांव तथा गोकुल में व्यतीत हुआ था। इनकी बाल लीलाओं में बांसुरी वादन तथा गोपियों के साथ चांदनी रात में रास लीला करना अधिक प्रसिद्ध है। ग्यारह वर्ष की आयु में श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम जी के साथ मथुरा लौट आए तथा अपने अत्याचारी मामा कंस का संहार करके अपने नाना नानी तथा माता पिता को कंस के अत्याचारों से मुक्त करके उन्हें असीम सुख दिया था। ज्ञातव्य हो कि उस समय कंस ने अपने माता-पिता, बहन बहनोई तथा साधु-संतों को अत्यधिक कष्ट दिया था। श्रीकृष्ण का यह अवतार अधर्म का नाश करके धर्म की पुनः स्थापना के निमित्त हुआ था।

द्वापरयुग के उत्तरार्ध में ही हस्तिनापुर नामक राज्य में चंद्रवंशीय महाराज धृतराष्ट्र का शासन था। महाराज धृतराष्ट्र भगवान श्रीकृष्ण के समकालीन ही थे। इनकी पत्नी का नाम गांधारी था। महाराज धृतराष्ट्र के एक सौ एक पुत्र थे। इनमें से सौ पुत्रों की माता गांधारी थी तथा एक पुत्र की माता गांधारी की दासी थी। महाराज धृतराष्ट्र के लघु भ्राता पांडु के देहावसान के पश्चात् पांडु की पत्नी कुंती तथा पांडु के पांचों पुत्र हस्तिनापुर में महाराज धृतराष्ट्र के संरक्षण में रहने लगे थे। महाराज धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव कहलाए तथा पांडु के पुत्र पांडव कहलाये। पांडु के पांचों पुत्रों के नाम क्रमशः युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल तथा सहदेव थे। कौरवों में ज्येष्ठ भ्राता का नाम दुर्योधन तथा उससे लघु भ्राता का नाम दुःशासन था। विस्तार भय से हम सभी कौरवों के नाम यहां प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं।

महाराज धृतराष्ट्र के पूर्वजों में कुरु नामक एक महाप्रतापी राजा हुए थे। उनके नाम पर महाराज धृतराष्ट्र तथा पाण्डु कुरुवंशी भी कहा जाता है। महाराज धृतराष्ट्र जन्मांध थे इसलिए महारानी गांधारी का भाई शकुनि अपनी बहन गांधारी का विवाह महाराज धृतराष्ट्र से नहीं करना चाहता था लेकिन परिस्थितियों के वशीभूत होकर उसे यह विवाह स्वीकार करना पड़ा था। विवाह तो हो गया लेकिन इस विवाह से आहत शकुनि ने कुरुवंश के समूल नष्ट करने की शपथ ली थी। शकुनि ने हस्तिनापुर में ही रहकर कौरवों को पांडवों के विरुद्ध भड़का कर आगामी युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर ली थी। महाराज धृतराष्ट्र ने पांडवों को खांडव वन का राज्य दे दिया था जिसे पांडवों ने अपने परिश्रम तथा श्रीकृष्ण के सहयोग से अति सुन्दर राज्य बना दिया था।

जब दुर्योधन ने वह वैभवशाली साम्राज्य देखा तो उसका विस्तारवादी मन उस साम्राज्य को प्राप्त करने का प्रयास करने लगा तथा उसने अपने मामा शकुनि की सहायता से द्यूत क्रीड़ा के लिए पांडवों को आमंत्रित किया।सरल हृदय ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर शकुनि के षड़यंत्र का शिकार हुए तथा द्यूत क्रीड़ा में पांचों पांडवों सहित अपनी पत्नी द्रौपदी को भी दांव पर लगा कर हार गए। फिर द्रौपदी के चीरहरण जैसी लज्जाजनक घटना घटित हुई। इसके बाद द्रौपदी की पुकार सुनकर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई थी। इसके बाद सत्तालोलुप दुर्योधन तथा महाराज धृतराष्ट्र ने शर्तें पूरी करने के पश्चात भी पांडवों का राज्य नहीं लौटाया तब महाभारत जैसा महाविनाशकारी युद्ध हुआ। इस युद्ध में श्रीकृष्ण तृतीय पांडव अर्जुन के सारथी बने थे।यह युद्ध कुरुक्षेत्र में लड़ा गया था।इस युद्ध में अर्जुन का मोह दूर करने के लिए श्री कृष्णा ने युद्ध क्षेत्र में अर्जुन को गीता का ज्ञान देकर कर्मयोग के महत्व को प्रतिपादित किया था। कर्मयोग के साथ साथ ही श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भक्ति योग तथा ज्ञान योग का भी महत्व बताया था।

ज्ञातव्य हो कि श्रीमद्भागवत गीता जिसे गीता भी कहा जाता है भगवान श्रीकृष्ण द्वारा रचित एक महान ग्रंथ है। इस ग्रंथ में वैसे तो ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग की सविस्तार व्याख्या की गई है लेकिन निष्काम कर्म को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है। गीता के अनुसार मनुष्य को निरंतर कर्म करते रहना चाहिए तथा परिणाम की इच्छा नहीं करनी चाहिए। परिणाम को ईश्वर के भरोसे छोड़ देना चाहिए। यही निष्काम कर्म योग है। श्रीमद्भागवत गीता का महत्व जितना द्वापरयुग में था उतना ही वर्तमान युग में भी है।यह विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ है। गीता का उपदेश सुनकर अर्जुन का मोह भंग हो गया था। इसके पश्चात धार्मिक वृत्ति वाले पांडवों तथा अधार्मिक वृत्ति वाले कौरवों के बीच भीषण युद्ध हुआ जिसमें धार्मिक वृत्ति के पांडवों ने विजय श्री का वरण किया। इस प्रकार इस युद्ध में अधर्म पर धर्म की तथा असत्य पर सत्य की विजय हुई।

इस युग में सज्जन तथा दुर्जन दोनों ही प्रकार के लोगों का जन्म हुआ था। श्रीकृष्ण जैसे सूत्रधार, वेद व्यास जी जैसे संत, युधिष्ठिर जैसे सत्यवादी तथा अर्जुन जैसे धनुर्धर, विदुर जैसे नीति निपुण तथा अभिमन्यु जैसे बालवीर इसी युग में जन्मे थे। वहीं धृतराष्ट्र जैसे पुत्र मोही, शकुनि जैसे षड़यंत्रकारी, दुर्योधन जैसे सत्तालोलुप तथा दुश्शासन जैसे नीच प्रवृत्ति के लोग भी इसी युग में जन्मे थे। इस प्रकार यह युग अच्छाई तथा बुराई दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों का युग था। इस प्रकार यह एक महत्वपूर्ण युग था। जय श्रीकृष्ण।

-सिरोंज

शब्द वितान : जीवन-दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त काव्य-संग्रह

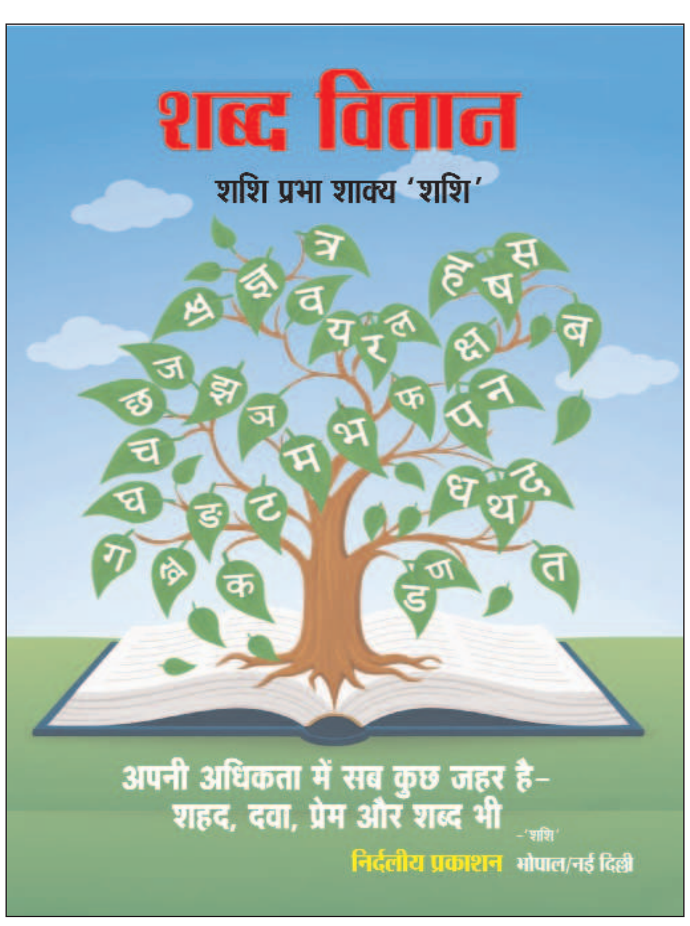

शिक्षाविद् एवं कवयित्री श्रीमती शशि प्रभा शाक्य 'शशि' की पुस्तक 'शब्द वितान' जीवन-दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त काव्य-संग्रह है। इसका प्रकाशन निर्दलीय प्रकाशन भोपाल/नई दिल्ली द्वारा किया गया है। उनकी प्रथम कृति 'काव्य अमृत' का प्रकाशन भी निर्दलीय प्रकाशन द्वारा किया गया था। उनकी नवीनतम कृति 'शब्द वितान' का लोकार्पण विगत ७ जून को दुष्यंत संग्रहालय में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस पुस्तक का प्राक्कथन निर्दलीय प्रकाशन के संस्थापक श्री कैलाश आदमी ने लिखा है। - प्रिंस अभिशेख अज्ञानी, संपादक

दुष्यंत संग्रहालय में आयोजित लोकार्पण समारोह में 'शब्द वितान' की समीक्षा साहित्यकार श्री अरविंद श्रीवास्तव एवं श्रीमती तरूणा चौहान ने प्रस्तुत की।

लोक कल्याण का भाव उकेरती कविताएं

समीक्षक/अरविंद श्रीवास्तव

शब्द वितान, अर्थात शब्दों का ताना-बाना, शब्द का ठिकाना, शब्द का परिक्षेत्र । इसमें शब्द की अभिव्यक्ति शक्ति और सम्प्रेषण का भाव निहित है। शब्द वितान, इस नाम से निर्दलीय प्रकाशन भोपाल द्वारा जो कविता संग्रह प्रकाशित किया गया है, उसकी रचयिता हैं श्रीमती शशि प्रभा शाक्य 'शशि'। संग्रह में कुल १०१ कविताएँ हैं, जो एक शुभ संख्या है। संग्रह में सर्वप्रथम माँ सरस्वती को स्मरण करते हुए नमामि वीणा वादिनी कविता को स्थान दिया गया है। इसके बाद जन्मदात्री माँ की वंदना की गई है। फिर आदर्श गुरु के रूप में पूज्यवर श्री आदमी जी को समर्पित कविता है। संग्रह में भक्ति, देश भक्ति, आध्यात्म, दर्शन, जीवन दर्शन, संस्कृति, नैतिकता, शिक्षा, ज्ञान, प्रकृति, मौसम, कल्पना, प्रेम और विरह आदि परम्परागत विषयों पर तो कविताएँ हैं ही साथ ही रोजमर्रा के विषयों पर भी तख्ती, जल, चाय निराली जैसी कविताएँ हैं।

आक्रोश और लहू की पुकार में तत्कालीन घटनाओं पर प्रतिक्रिया है। मेरे शब्द कविता में भाव और शब्द के मेल से कविता निर्माण की प्रक्रिया बताई गई है -

भावों की अपनी अनुभूति,सुन्दर मूरत गढ़ती।
शब्दों का सुन्दर संयोजन, नई कविता रचती।

नारी तुम नारायणी में स्त्री के कल्याणकारी स्वरूप का आह्वान किया गया है -

नारी तुम नारायणी,करो जगत कल्याण।
विशाल हृदय पाया है तुमने, और गुणों की खान।

धैर्य की परीक्षा में भारत की बेटी सुनीता विलियम्स के धैर्य और साहस की वन्दना की है -

लेकिन धैर्य नहीं खोया
और चट्टानों सी अडिग रही।
ऐसी दिव्य पटाका बनकर
अंतरिक्ष में छाई रही।

'घर का चिराग' में मार्गदर्शन दिया गया है कि बच्चों को इतने संस्कार अवश्य दें कि वे जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें -

इसीलिए अपने बच्चों को,
संस्कार से सुसज्जित कर दो।
ना मार्ग कभी भटकें अपना,
उनको इतना सक्षम कर दो।

'रूप सुंदरी' में सौन्दर्य को बहुत ही निराले ढंग से देखा गया है -

फूलों की मंद हँसी हो तुम,
या धरती की हरियाली।
खेतों की मखमली चूनर हो,
या कोयल की वाणी मतवाली।।

संग्रह की अंतिम कविता नव वर्ष पर है। इससे एक अंत के साथ एक नई शुरुआत के स्वागत का संदेश मिलता है।

संग्रह में हर कविता के साथ, कविता के केंद्रीय भाव को व्यक्त करता हुआ चित्र दिया गया है। सबसे पहले अपनी बात में शशिप्रभा जी ने इस कविता संग्रह के लेखन-उद्देश्य को व्यक्त किया है। प्राक्कथन में कैलाश आदमी के आशीर्वचन हैं। प्रथम कबर पृष्ठ पर शब्द वितान की चित्रात्मक अभिव्यक्ति है और शशिप्रभा जी का ध्येय वाक्य है - अपनी अधिकता में सब कुछ जहर है - शहद, दवा, प्रेम और शब्द भी। अंतिम कबर पृष्ठ पर शशिप्रभा जी का परिचय और उनकी साहित्यिक उपलब्धियाँ हैं।

संग्रह की भाषा सहज, सरल और कथ्य के अनुरूप है। कविताओं में लोक कल्याण का भाव निहित है। सभी कविताएँ पठनीय हैं और संग्रह सहेजने योग्य है। शशिप्रभा जी ऐसे ही उत्तम लेखन करती रहें। उनकी आगामी रचनाओं के लिए शुभकामनायें और स्वागत का भाव व्यक्त करता हूँ।

जीवन-मूल्यों का सशक्त दस्तावेज़

समीक्षक/ श्रीमती तरूणा चौहान

श्रीमती शशि प्रभा शाक्य 'शशि' का काव्य-संग्रह 'शब्द वितान' न केवल एक साहित्यिक उपलब्धि है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक सरोकारों और जीवन-मूल्यों का सशक्त दस्तावेज़ भी है। इस पुस्तक का प्रकाशन निर्दलीय समाचार पत्र प्रकाशन परिवार द्वारा किया गया है, जो सदैव नवोदित एवं सृजनशील साहित्यकारों को प्रोत्साहन प्रदान करता रहा है।

श्रीमती शशि प्रभा शाक्य जी की यह दूसरी प्रकाशित कृति है। इस संग्रह में माँ सरस्वती, राष्ट्र, संविधान, जवान, परिवार, प्रेम, श्रृंगार, साहित्य, मातृशक्ति, प्रकृति, सामाजिक दायित्व और जीवन-दर्शन जैसे विविध विषयों पर अत्यंत भावपूर्ण एवं प्रेरणादायक रचनाएँ संकलित हैं। निस्संदेह यह पुस्तक पाठकों के जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान करने वाली है।

संग्रह की सभी कविताएँ सहज, सरस और भावनात्मक हैं। विशेष रूप से मातृशक्ति कविता की ये पंक्तियाँ मन को गहराई से स्पर्श करती हैं-

माँ की ममता से सजा रहे सबका यह संसार,
पत्नी बन लक्ष्मी और बहन-बेटी का प्यार।

कवयित्री ने अपने साहित्यिक गुरु आदरणीय कैलाश आदमी जी को 'मेरे आदर्श' रचना को समर्पित किया है। यह समर्पण उन सभी लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत है जो सफलता प्राप्त करने के बाद भी अपने गुरुजनों का सम्मान करना नहीं भूलते। आदरणीय कैलाश आदमी जी ने अपने जीवनकाल में अनेक प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया है और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया है। उनका जय जगत की भावना के साथ किया जा रहा साहित्यिक एवं सामाजिक कार्य वास्तव में प्रेरणादायी है। श्रीमती शशि ने समर्पित रचना बड़े प्रभावशाली ढंग से लिखी जिसकी उल्लेखनीय पंक्ति -

इस ओजमयी वाणी का स्वर
तन मन को झंकृत कर देता है
अंधकार युक्त हर जीवन का
मार्ग प्रशस्त कर देता है

'सिंदूर की शक्ति' कविता में नारी-सम्मान और भारतीय संस्कृति का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण है-

मस्तक पर जब यह साज जाए,
एक दिव्य शक्ति बन जाता है।
बजरंगबली का बल लेकर,
हर अत्याचारी से लड़ जाता है।

इसी प्रकार 'भारत की सेवा' कविता हमारे वीर सैनिकों को समर्पित है-

सेवा का धर्म न कोई जाति होती है,
देश की रक्षा से बढ़कर न उनकी भक्ति होती है।

यह रचना उन वीर जवानों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव जगाती है जो हर परिस्थिति में राष्ट्र की रक्षा हेतु तत्पर रहते हैं।

'विस्तृत वितान' कविता में प्रकृति की अद्भुत छटा का चित्रण किया गया है-

रवि की इस ऊर्जा से सारा जग
उजियारा होता है,
इस विस्तृत वितान तले ही
हर प्राणी सुख पाता है।

वहीं 'ममता की स्नेहिल छाया' माँ-बेटी के रिश्ते की कोमल भावनाओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त करती है। कवयित्री ने सिद्ध किया है कि मातृशक्ति जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है, जो हर सुख-दुख में संबल बनकर साथ रहती है।

'काश ऐसा होता' कविता समाज में भाईचारे और मानवीय एकता का संदेश देती है-

मन में कोई द्वेष न होता,
होता तो बस भाईचारा,
कोई किसी का शत्रु न होता,
न कोई होता बेचारा।

यह कविता वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है। संग्रह की अन्य रचनाएँ जैसे प्रेम संदेश, व्रत का महत्व, पुस्तक ही जीवन, गुरु महिमा, एक किसान की आस, साड़ी की सुंदरता, तीर्थराज, रूप सुंदरी, चाय निराली, पतझड़, परख तथा नव वर्ष में नव रूप सजे भी अपने-अपने विषयों पर गहन चिंतन प्रस्तुत करती हैं।

विशेष रूप से 'चाय निराली' कविता रिश्तों की आत्मीयता का सुंदर चित्रण करती है, जबकि 'पतझड़' समय के परिवर्तन और जीवन के उतार-चढ़ाव का भावपूर्ण संकेत देती है। 'परख' आज के सामाजिक परिवेश में रिश्तों की जटिलताओं को उजागर करती है।

नववर्ष पर आधारित कविता 'नव वर्ष' में नव रूप सजे में कवयित्री ने मानवता, सेवा, प्रेम, सद्भाव और माता-पिता के सम्मान का संदेश दिया है। यह कविता पाठकों को जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है। श्रीमती शशि प्रभा शाक्य जी की कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सहज अभिव्यक्ति और समाज के प्रत्येक पक्ष को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता है। उनकी रचनाएँ केवल शब्दों का संयोजन नहीं, बल्कि जीवन के विविध रंगों और अनुभवों का सजीव चित्रण हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शब्द वितान हिंदी साहित्य जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करेगा तथा पाठकों को चिंतन, संवेदना और सकारात्मकता से समृद्ध करेगा। इस उत्कृष्ट काव्य-संग्रह के सफल सृजन, प्रकाशन एवं लोकार्पण हेतु मैं कवयित्री श्रीमती शशि प्रभा शाक्य जी तथा निर्दलीय समाचार पत्र प्रकाशन परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी लेखनी निरंतर साहित्य-जगत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाती रहे और पाठकों को नए विचार एवं प्रेरणाएँ प्रदान करती रहे। अंत में, मैं आदरणीय कैलाश आदमी जी एवं कवयित्री श्रीमती शशि प्रभा शाक्य जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने मुझे इस उत्कृष्ट कृति शब्द वितान की समीक्षा करने का अवसर प्रदान किया।

भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण चिंतन राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

निर्दलीय संवाद

भोपाल। शासकीय हमीदिया महाविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण चिंतन विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ग्लोबल संस्कृत फोरम एवं विदुषी समूह मध्यप्रांत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस संगोष्ठी में हमीदिया महाविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्राध्यापक श्री त्रिपाठी ने कहा- क्रौंच पक्षी का वध करने वाले निषाद को श्रापित किया था कि अनेक जन्मों तक निषाद को प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी अर्थात् महर्षि वाल्मीकि द्वारा पक्षी के प्राणों की रक्षा के ध्यान से उनके पर्यावरण चिंतन का बोध होता है ।

प्रेस क्लब के अध्यक्ष डॉ. नवीन आनद जोशी कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। ग्लोबल संस्कृत फोरम के महासचिव तथा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ. राजेश कुमार मिश्र ने संस्कृत साहित्य में पर्यावरण के सिद्धांत प्रतिपादित करते हुए छात्रों को संस्कृत में अपना रोजगारोन्मूलक भविष्य बनाने के लिए भी प्रेरित किया। विशिष्ट वक्ता डॉ. मनीष दुबे ने वैश्विक पर्यावरण के संरक्षण में भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण सूत्र बताते हुए पूरे अयोध्यावासियों के लिए कम्युनिटी एयर कंडीशनिंग की व्यवस्था का रोचक वर्णन सामने रखा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्राध्यापक रचना मिश्रा ने कहा कि पर्यावरण चिंतन का सही बोध संस्कृत से ही प्राप्त होता है । कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. नीरज धाकड ने किया। आभार सह संयोजक डॉ. ऋतु वर्मा ने माना।